कथा सरिता

सन्यासी राजकुमारी

एक राजा की पुत्री के मन में वैराग्य की भावनाएं थीं। जब राजकुमारी विवाह योग्य हुई तो राजा को उसके विवाह के लिए योग्य वर नहीं मिल पा रहा था। राजा ने पुत्री की भावनाओं को समझते हुए बहुत सोच-विचार करके उसका विवाह एक गरीब सन्यासी से करवा दिया। राजा ने सोचा कि एक सन्यासी ही राजकुमारी की भावनाओं की कद्र कर सकता है। विवाह के बाद राजकुमारी खुशी-खुशी सन्यासी की कुटिया में रहने आ गई। कुटिया की सफाई करते समय राजकुमारी को एक बर्तन में दो सूखी रोटियां दिखाई दीं। उसने अपने सन्यासी पति से पूछा कि रोटियां यहाँ क्यों रखी हैं? सन्यासी ने जवाब दिया कि ये रोटियां कल के लिए रखी हैं, अगर कल खाना नहीं मिला तो हम एक-एक रोटी खा लेंगे। सन्यासी का ये जवाब सुनकर राजकुमारी हँस पड़ी। राजकुमारी ने कहा कि मेरे पिता ने मेरा विवाह आपके साथ इसलिए किया था, क्योंकि उन्हें ये लगता है कि आप भी मेरी ही तरह वैरागी हैं, आप तो सिर्फ भक्ति करते हैं और कल की चिंता करते हैं। सच्चा भक्त वही है जो कल की चिंता नहीं करता और भगवान पर पूरा भरोसा करता है। अगले दिन की चिंता तो जानवर भी नहीं करते हैं, हम तो इंसान हैं। अगर भगवान चाहेगा तो हमें खाना मिल जाएगा और नहीं मिलेगा तो रातभर आनंद से प्रार्थना करेंगे। ये बातें सुनकर सन्यासी की आंखें खुल गई। उसे समझ आ गया कि उसकी पत्नी ही असली सन्यासी है। उसने राजकुमारी से कहा कि आप तो राजा की बेटी हैं, राजमहल छोड़कर मेरी छोटी-सी कुटिया में आई हैं, जबकि मैं तो पहले से ही एक फकीर हूँ, फिर भी मुझे कल की चिंता सता रही थी। सिर्फ कहने से ही कोई सन्यासी नहीं होता, सन्यास को जीवन में उतारना पड़ता है। आपने मुझे वैराग्य का महत्व समझा दिया।

शिक्षा : अगर हम भगवान की भक्ति करते हैं तो विश्वास भी होना चाहिए कि भगवान हर समय हमारे साथ है। उसको हमारी चिंता हमसे ज़्यादा रहती है।

जीतने की ज़िद

एक गांव में कुसुम नाम की एक लड़की रहती थी। कुसुम का चयन एयरफोर्स में हो गया था और इस बात को लेकर उसके गांव वाले बड़े आश्चर्यचकित थे। किसी ने सोचा भी नहीं था कि एक छोटे से गांव की कमजोर वर्ग की लड़की एक दिन पूरे गांव का नाम रोशन करेगी। एक बार एयरफोर्स के कुछ अफसरों का जत्था एवरेस्ट की चढ़ाई के लिए जा रहा था। कुसुम को भी उसमें शामिल किया गया। हालांकि उसे पर्वतारोहण का कोई भी अनुभव नहीं था। कुसुम कड़ी मेहनत करने लगी और कुछ ही महीनों में वह अपने दोस्तों के साथ एवरेस्ट के पहले बेस कैंप पर पहुंच गई।

एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए पांच अलग-अलग पड़ाव पार करने होते हैं। उसने हार नहीं मानी और मजबूती से चलती रही। पर अंतिम पड़ाव पर आकर वह बहुत थक गई और उसे सांस लेने में दिक्कत होने लगी। उसकी टीम के लीडर ने उसे वहीं से लौट जाने का आदेश दिया। कुसुम ने जिंदगी में पहली बार हार का सामना किया था। वह जब वापस अपने गांव लौटी तो गांव वालों ने उसका बड़ा अपमान किया और उसका मज़ाक उड़ाया। उस दिन उसने तय कर लिया कि जब तक मैं एवरेस्ट की चढ़ाई नहीं करूंगी, जिंदगी में और कुछ नहीं करूंगी। लंबी छुट्टी लेकर कुसुम अपने पैसों से एवरेस्ट पर चढ़ाई करने के लिए पहुंच गई। इस बार जोश कई गुना ज़्यादा था। उसने जीवन भर की सारी जमा पूंजी इस पर लगा दी थी। एक बार फिर अंतिम पड़ाव तक पहुंच गई लेकिन इस बार भी अंतिम पड़ाव पर जाकर उसके हौसले पस्त होने लगे, साथ ही मौसम भी खराब होने लगा। अब कुसुम के सामने चुनौतियां ज़्यादा थीं। जिंदगी की पूरी कमाई, गांव वालों की इज्जत, माता-पिता का विश्वास और अपने भीतर की खुशी एक सवाल बनकर उसकी आंखों के सामने तैर रही थी। उसने तय किया कि चाहे कुछ भी हो जाए अब वापस नहीं लौटना है।

अगले 8 घंटे उसकी जिंदगी के सबसे कठिन थे। लेकिन फिर भी वह डटी रही और अंत में वह एवरेस्ट की चोटी तक पहुंच गई। जब कुसुम वापस अपने गांव लौटी तो गांव वालों ने दिल खोलकर उसका स्वागत किया और उससे माफी भी मांगी।

महात्मा और खजूर

एक बार एक महात्मा बाजार से होकर गुजर रहा था। रास्ते में एक व्यक्ति खजूर बेच रहा था। उस महात्मा के मन में विचार आया कि खजूर लेने चाहिए। उसने अपने मन को समझाया और वहां से चल दिए। किंतु महात्मा पूरी रात भर सो नहीं पाया। वह विवश होकर जंगल में गया और जितना बड़ा लकड़ी का गट्ठर उठा सकता था, उसने उठाया। उस महात्मा ने अपने मन से कहा कि यदि तुझे खजूर खाने हैं तो यह बोझ उठाना ही पड़ेगा। महात्मा, थोड़ी दूर ही चलता, फिर गिर जाता, फिर चलता और गिरता। उसमें एक गट्ठर उठाने की हिम्मत नहीं थी लेकिन उसने लकड़ी के भारी-भारी दो गट्ठर उठा रखे थे।

दो-ढाई मील की यात्रा पूरी करके वह शहर पहुंचा और उन लकड़ियों को बेचकर जो पैसे मिले उससे खजूर खरीदने के लिए बाजार में चल दिया। खजूर सामने देखकर महात्मा का मन बड़ा प्रसन्न हुआ। महात्मा ने उन पैसों से खजूर खरीदे लेकिन महात्मा ने अपने मन से कहा कि आज तूने खजूर मांगे हैं, कल फिर कोई और इच्छा होगी। कल अच्छे-अच्छे कपड़े और स्त्री मांगेगा, अगर स्त्री आई तो बाल-बच्चे भी होंगे। तब तो मैं पूरी तरह से तेरा गुलाम ही हो जाऊंगा। सामने से एक मुसाफिर आ रहा था। महात्मा ने उस मुसाफिर को बुलाकर सारे खजूर उसे दे दिए और खुद को मन का गुलाम बनने से बचा लिया।

अमरोहा-उ.प्र.। विधायक एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री महबूब अली को दीपावली की शुभकामनाएं देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. योगिता एवं ब्र.कु. अर्चना।

ऑस्ट्रेलिया। यू.एन. पीस डे के अवसर पर 'फाइंडिंग पीस इन ए चेंजिंग वर्ल्ड' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं डॉ. लैन गॉलर,ओ.ए.एम., डॉ. रुथ गॉलर,पूर्व अध्यक्ष,मेडिटेशन ऑस्ट्रेलिया तथा ब्र.कु. चार्ली हॉग।

सम्बलपुर-ओडिशा। पावन सरोवर में चिल्ड्रेन पार्क का उद्घाटन करते हुए डी.आर.एम. डॉ. जयदीप गुप्ता, ब्र.कु. रुपेश,मा. आबू, उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. पार्वती तथा अन्य।

अयोध्या-उ.प्र.। उप निबंधक एस.बी.सिंह को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुधा तथा ब्र.कु. उषा।

राघोपुर-सिमराही बाज़ार(बिहार)। स्नेह मिलन के पश्चात् उद्योगपति एवं सार्वजनिक दुर्गा मन्दिर पूजा समिति अध्यक्ष अशोक भगत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रंजू। साथ हैं ब्र.कु. बबीता।

मीरगंज-गोपालगंज(बिहार)। चैतन्य देवियों की झाँकी का अवलोकन करते हुए नगर थाना इंस्पेक्टर सतीश कुमार हिमांशु। साथ हैं ब्र.कु. सुनीता तथा ब्र.कु. उर्मिला।

गांधीनगर-गुज.। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए गोविंद वनजारा,एम.डी.,जी.के.वी. इक्रा प्राइवेट लि., कॉर्पोरेटर उर्मिला वर्मा, कॉर्पोरेटर राकेश पटेल, ब्र.कु. सुनीता, कॉर्पोरेटर हीरल जोशी, अरुण चौधरी,आई.एफ.एस.,भारतीय वन सेवा अधिकारी तथा प्रख्यात व्यवसायी राजेश भट्ट।

नौनपार-सुपौल(बिहार)। नवरात्रि पर दुर्गा मंदिर में 'चरित्र निर्माण-आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का शुभारम्भ करते हुए वरिष्ठ समाजसेवी व मंदिर समिति अध्यक्ष रेशम लाल राम, सेन्ट्रल बैंक मैनेजर सचिन कुमार सिंह, पूर्व प्रमुख विनय वर्धन, क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. रंजू, डॉ. सूर्यनारायण ठाकुर, प्राध्यापक प्रकाश चन्द्र झा, डीलर महावीर, ब्र.कु. बबीता, ब्र.कु. किशोर तथा अन्य।